श्रम विभाग

म्रादेश

दिनांक 14 ग्रवत्वर, 1986

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/148-86/38335.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० श्रारती ग्रेफाईट प्रा० े लि०,तिनांव रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जय प्रकाश, पुत्र श्री राम ग्रविकास मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन. 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, घोशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संव 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना संव 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संविधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं कोकि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संवधित मामला है:—

यया श्री जय प्रकाश की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ?यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/148-86/38342.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० ग्रारती ग्रेफाईट प्रा० लि०, तिगांव रोड, फरीदावाद, के श्रमिक श्री राज कुमार, पुत्र श्री मन्कट मण्डल, मार्फत फरीदाबाद, कामगार यूनियन, 2/7, गोषी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री राज कुमार की रेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रो० वि०/एफ० छी०/148-86/38349.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. ग्रारती ग्रेफाईट प्रा० लि०, तिगांव रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री विस्मीला खां, पुत्र श्री ग्रक्तवर खां, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा, उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद ब्रिह्मित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री विस्त्रीला खां की सेवाप्रों का सतापन नापीवित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?